SHODH SAGAR®
Universal Research Reports
ISSN: 2348-5612 | Vol. 5 | Issue 5 | Apr-Jun 2018 | Peer Reviewed & Refereed

सूफी काव्य में नारी की अवधारणा

डॉ0 राम अधार सिंह यादव
एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी–विभाग
एस0 एम0 कॉलेज चन्दौसी (सम्भल)

भारतीय संस्कृति का विकास मानव संस्कृति के साथ–साथ उत्पन्न और विकसित हुई है। सृष्टि की मेरूदण्ड नारी को भारतीय संस्कृति में सर्वश्रेष्ठ मापदण्ड माना गया है। प्रकृति ने नारी को कोमल जरूर बनाया है परन्तु उसने परम्पराओं से बाहर निकलकर मील का पत्थर साबित किया है। आज नारी ही परिवार की नींव है समाज की शक्ति है और राष्ट्र की समृद्धि का आधार है। पूर्व वैदिक युग में नारी मातृशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित थी। नारी का ही परिवार पर अधिकार था वैदिक काल में महिलाये पुरूष के समान सभी क्षेत्रों में निपुण थी। पूरा समाज नारी जाति के प्रति सरोकार एवं सम्मान व्यक्त करता था। मनु स्मृति में नारी के बारे में लिखा गया हैः–

"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।"1

कालान्तर में धीरे–धीरे बदलाव आता गया। उनके सारे अधिकार सीमित कर दियें गये और स्त्री को अनेक बन्धनों में बाँध दिया गया। उनका स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त हो गया। उसके शरीर पर पति का स्वत्व माना गया। धर्म सूत्रो और स्मृतियों के युग में स्त्री की दशा पूर्णतः पतनोन्मुख हो गई। धीरे–धीरे उसके अधिकार छीने जाने से उसे शिक्षा एवं वैदिक धार्मिक कार्यो से वंचित होना पड़ा। अंततः उसे पुरूष के अधीन पराधीनता की स्थिति में ला दिया गया और मध्यकाल के आगमन पर उसकी यह स्थिति बद से बदतर होती गयी।

स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण और व्यवहार विभिन्न युगो की सामाजिक संरचना एवं परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में बदलते रहे है। एक सफल प्रेमी के लिए नारी अत्यंत मनोरम और स्पृहणीय हैं। असफल प्रेमी के लिए वह अविश्वास, क्रूर और कुटिलता की प्रतिमूर्ति है। सफल गृहस्थ के लिए वह सुख की खान, असन्तुष्ट के लिए 'गृह बन्धन नाना जंजाला' है। खिन्न और पथभ्रष्ट अवधूत के लिए नारी नरक का द्वार है। अनुभवी उदारमना या सिद्ध के लिए वह आद्याशक्ति परमकल्याणकारी मॉ है। सुधारवादियों के लिए विताडित दया का पात्र है।

© 2018 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

संतो ने 'नारी' शब्द का ग्रहण वासना के प्रतीकार्थ में किया हैं और भक्तिकाल के संत एवं भक्त कवियों का मापदण्ड 'भक्ति' ही थी। भक्ति–भावना से प्रभावित होकर कवियों ने विषय लिप्त नारी को निन्दनीय तथा भक्तिमयी नारी को आदर प्रदान किया। सूफी परम्परा के कवियों ने नारी को प्यार और उपासना की वस्तु माना है। मानव उसे बल प्रयोग या कृपाण की धार से अधिकार नही कर सकता। अपितु योग तथा त्याग और उत्सर्ग द्वारा ही प्राप्त कर सकता है। सन्तों के समान नारी के कामिनी रूप को न देखकर उसके सत् कल्याण विधायक रूप से ही प्रभावित हुए है। इन सूफी संतों को नारी का प्रेम पुरूष के लिए काम्य है।

सूफी काव्य में पुरूष नारी के ऊपर दीप–शलभ के समान बलि होनी को प्रस्तुत है। उसके प्रेम में वासना अथवा लोलुपता नहीं है। सूफी काव्य में नर–नारी के लौकिक प्रेम के माध्यम से अध्यात्मक के क्षेत्र में आत्मा–परमात्मा के सम्बंध को चित्रण किया गया है। डॉ आशा गुप्ता के विचारानुसार "एक ओर यदि सूफी कवियों अपने काव्य में नर–नारी के लौकिक प्रेम का चित्रण किया है तो दूसरी ओर नर–नारी के प्रेम के माध्यम से आत्मा–परमात्मा के सम्बंध की चर्चा करके रहस्यवाद का प्रतिपादन किया है।"2

सभी कवियों ने नारी सौन्दर्य चित्रण में आध्यात्मिकता का पुट प्रस्तुत किया है, और साथ ही नख–शिख वर्णन भी। नारी के इस अलौकिक दिव्य सौन्दर्य के प्रति पुरूष का सहज आकर्षण होता है। सब दीप शलभ योगी बन जाते है। "हृदय में स्पष्ट भावो की स्वतंत्र व्यंजना हुए बिना प्रेम में पूर्णता नहीं आ सकती। एक प्राण में दूसरे प्राण के घुल जाने की वांछा हुए बिना प्रेम मे पूर्णता नहीं आ सकती। एक भावना का दूसरी भावना में निहित हुए बिना प्रेम में मादकता नहीं आती है। अपनी आशाए, आकांक्षाए, अभिलाषाये और सब कुछ आराध्य के चरणों में समर्पित कर देने की भवनाए आए बिना प्रेम में सहृदयता नहीं आती। प्रेम की सम्पूर्ण व्यंजनाए और व्याख्याए एक पति–पत्नी में निहित है। रहस्यवाद के इसी प्रेम में आत्मा स्त्री बनकर परमात्मा के लिए तड़पती है। सूफी मत के इसी प्रेम में जीवात्मा एक पुरूष और परमात्मा रूपी स्त्री के लिए तड़पता है। इसी प्रेम के संयोग में रहस्यवाद और सूफी मत की पूर्णता है। प्रेम के इस संयोग को आध्यात्मिक विवाह कहते हैं।"3

सूफी सिद्धान्त है 'जहाँ रूप तह प्रेम'। अतः अलौकिक रूप सौन्दर्य को हृदयंगम करना, उससे प्रेम करना। यह जीवन का अभीष्ट उद्देश्य है।' सभी सूफी कवियों ने इस परम सुन्दरी अधरामृत की मकरन्दी जीवनदायीनि स्फूर्ति की चर्चा की है। सौन्दर्यसुरा का पान किये बिना जीवन निरर्थक हैं जीवन का आनन्द इस मदयान में ही–

"वै मद अपने हाथ सो पिवउ देखि मुख तोर।
चाहसि तो मद मोल ले प्रान पियारा मोर''

© 2018 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

बिना कदम्बरी के पिये, त्रास न मन सो जात।
दयावती होइ दीजिए, होलिक लग्गी आग।।''4

इसी परम सौन्दर्य से जो प्रेम उत्पन्न होता है। वह आध्यात्मिक इश्क हकीकी होता है, और इस प्रेम को पुष्ट करने वाला विरह भी आध्यात्मिक ही हैं। यही नारी सौन्दर्य चित्रण का आध्यात्मिक पक्ष है। यही कारण है कि सूफी साफ–साफ कह देते है कि इश्क मिजाजी इश्क हकीकी की सीढ़ी हैं और उसी के द्वारा इंसान खुदी को भेट कर खुदा बन जाता है।

सूफी काव्य परंपरा में सामान्य नारी के सामान्य रूप चित्रण उस सामान्य लावण्य के प्रभाव से उत्पन्न हुए है। दाम्पत्य भाव से (पति–पत्नी में) परिग्रह भाव से (अनेक पत्नीयों के प्रति) प्रकृति के उद्दीपन से (प्रथम दृष्टि में प्रेम) पूर्ण रागजनित प्रेम। प्रेममार्गी कवियों के प्रेमाख्यानो में 'पूर्ण राग जनित प्रेम' को प्रधानता दी गयी हें नारी के प्रति सूफी काव्यों में सर्वत्र सहानुभूति और संवेदना प्रदर्शित की गयी है। नारी के प्रति यह कोमल भाव विशेषतः उसकी वियोग दशा को देखने पर उत्पन्न हुआ हैं। वियोग दशा को शान्त करने में प्रकृति ने जिस प्रकार से संवेदना प्रदर्शित की है 'पद्मावत' में समुद्र ने 'इन्द्रावती' में पवन ने नायक–नायिका को मिलन में सक्रिय सहायता दी है। 5

नायक की अपेक्षा नायिका में वासना का आवेग अधिक दिखाया गया है। रत्नसेन जायसी का जहाँ आरम्भ से ही शुद्ध प्रणय भाव से अनुप्राणित दिखाई पड़ता है। वहाँ नायिका पद्मावती प्रारम्भ से ही यौन ज्वार और कामुकता की बाढ़ में बहती हुई दृष्टिगोचर होती है इसीलिए अपने अन्तरंग मित्र तोते से कोई उपयुक्त वर खोज देने की याचना करती है–

"सुनु हिरामनि कहौं बुझाई। दिन–दिन मदन सतावै आई।
जोबन मोर भयउ जस गंगा। देह–देह हम्ह लाग अनंगा।"
कँवल भॅवर ओही बन पावै। को मिलाइ तन तपनि बुझाई।"

"तन तपनि, यौवन–भार एवं कामोन्माद का जैसा निरूपण किया गया है वह प्रणय भावना की अपेक्षा काम–वासना का ही अधिक परिचायक है। यह दूसरी बात है कि आगे चलकर परिस्थिति की विशेष के प्रभाव से यह वासना निखरकर भावना में परिणत हो जाती है।"6

सूफी काव्य में प्रेम मर्यादा निष्ठ रहा है साथ ही यह प्रेम परिस्थितियों से पुष्ट भी है। एक ओर तो यौवन का उच्छंखलता तो दूसरी ओर प्रगाढ़ प्रेम है। जिसका मूल्य प्राणो से भी अधिक है। रतनसेन को शूली पर चढ़ाने के उपक्रम में पद्मावती कहती है– "काढ़ी प्रान बैठी लेइ हाथा, मरै तो मरौ जिऔ एक साथा।'' वही दूसरी ओर उस गृहणी का प्रेम और वियोगाताप है जिसका पति उसके प्रेम का अवमानना करके सपत्नी

© 2018 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

लाने के लिए किसी दूर देश को जाता है जहाँ वह किसी प्रकार नही पहुंच सकती। फिर भी पतिव्रता गृहिणी पति में सर्वथा अनुरक्त है और पति के सुख में सुख मानती है। ईर्ष्या का विस्तार नहीं करती। नागमति अपनी सपत्नी पद्मावती को सन्देश भेजती है–

हमहु वियाही संग आहि पीउ। आपहु पाइ जानु पर जीऊ।
अबह मया करू–करू जिउ फेरा। मोहि जियाउ कंत देई मोरा।।
मोहि भोग सौ, काज न बारी। सौह दीठि कै चाहन हारी।।
सवति न होहि तो बैरिनि, मोहि कंत जेहि हाथ।
आनि मिलाव एक बेर, तोर पाय मोर माथ।।

"सूफी काव्य में नारी लौकिक और अलौकिक दोनो रूपों में चित्रित की गयी है। अलौकिक रूप में वह परमशक्ति, ज्योति, साधक की साधना, उपासना और भक्ति की पात्रा है। लौकिक दृष्टि से वह पुरूष की प्रेयसी और पत्नी है। गृह के कर्म क्षेत्र विविध परिवारिक सम्बधों में उसके सत् एवं असत् रूप की व्यंजना हुई है।"7

हिन्दी प्रेमाख्यान को में नारीत्व के प्रति सर्वोच्च आदर भाव की व्यंजना हुई है। सूफी काव्य में पुरूष प्रेम का याचक बना, तोप तलवार का गर्व त्यागकर वह प्रेम–साधना के मार्ग पर आया। नारी प्रेम की स्वामिनी बनी, स्वीकारिका बनी और प्रिय के स्वयं वरण के लिए उसे स्वाधिकार प्राप्त हुआ। इस प्रकार नारी लवणिमा मधुरिमा और गरिमा की आस्पद बनी। पति–पत्नी या प्रेमी–प्रेयसी में सख्य भाव का संचरण हुआ और प्रेम की संवेदना दोनो मे जागृत हुई। नारी के प्रति काल विशेष में समाज का दृष्टिकोण चाहे जितना परिवर्तनोन्मुख रहा हो किन्तु यह सच है कि कन्या, पत्नी और माता के रूप में नारी भारतभूमि में सदा वात्सल्य, स्नेह और श्रद्धा का भाजन रही है। मानव जीवन की विकास प्रक्रिया में नारी का योग असंदिग्ध रूप से सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहा है। उसके बिना न सृष्टि रचना सम्भव है न उसका संचालन ही। नारी संसार की सबसे बड़ी विभूति है, सौन्दर्य का आगार है, शक्ति का केन्द्र है। प्रकृति और पुरूष के योग से निर्मित सृष्टि ब्रह्म और माया की अभिव्यक्ति मानी गई है।

सन्दर्भ सूचीः

1– मनु स्मृति संस्कृत ग्रन्थ तृतीय अध्याय श्लोक 56 सर विलियम जॉन्स द्वारा अंग्रेजी अनुवाद 1776
2– मध्ययुगीन सगुण एवं निर्गुण साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन
डॉ0 आशा गुप्ता हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग 1970 पृष्ठ–5

© 2018 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

3–डॉ0 रामकुमार वर्मा, कबीर का रहस्यवाद साहित्य भवन इलाहाबाद 1938 पृष्ठ–66

4– नूर मुहम्मद, इन्द्रावती संवत् 1801 पृष्ठ 78 व 34

5– चन्द्रवली पाण्डेय, तसव्वुफ अथवा सुफीमत सरस्वती मंदिर वनारस 1945 पृष्ठ 11

6– सम्पादक नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली 1978 पृष्ठ 172

7– डॉ0 उषा पाण्डेय, मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य में नारी भावना हिन्दी साहित्य संसार दिल्ली 1954 पृष्ठ 103

© 2018 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License
[CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com